e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

IJIRSET

International Journal of Innovative Research in

SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 8, August 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462 | 6381 907 438 | ijirset@gmail.com | www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(IJIRSET)

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108062 |

भारत में नक्सलवाद की समस्या

प्रभुराम बामणियाँ

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान

श्री डूंगरगढ़ महाविद्यालय, श्री डूंगरगढ़ (बीकानेर) राजस्थान

सारांश :

भारत एक लोकतंत्रात्मक देश है जहां जनता को अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का पूरा अधिकार है परन्तु जनता द्वारा अपने अधिकारों एवं हितों की पूर्ति हेतु हिंसात्मक साधन अपनाना या हिंसात्मक आन्दोलन चलाना कतिपय उचित प्रतीत नहीं होता है। लेकिन वर्तमान समय में कोई भी आन्दोलन हो प्रारंम्भ में शांतिपूर्वक चलने के बाद धीरे–धीरे हिंसात्मक रूप धारण कर ही लेता है, इसी प्रकार का एक उदाहरण नक्सलवाद के रूप में हमारे सामने है जो न केवल केन्द्र सरकार अपितु कई राज्य सरकारों के लिए भी एक भयंकर समस्या बन चुका है। माना जा रहा है कि यह ऐसे अपराधी तत्वों का जमावड़ा है, जिन्हें देश के संविधान और हमारे लोकतंत्र पर भरोसा नहीं है। नक्सलवाद को आतंकवाद का भी पर्याय माना जाता है क्योंकि ये आतंकवादी ग्रामीणों को बुनियादी सुविधाओं से वंचित रखना चाहते हैं। वे गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम, रोजगार नक्सली ग्रामीणों और आदिवासियों का न तो सामाजिक विकास चाहते हैं और न ही आर्थिक। प्रस्तुत शोध पत्र में नक्सलवाद जो की वर्तमान समय की एक ज्वलंत समस्या है का विश्लेषण भारत के संदर्भ में किया गया है, जिसके अंतर्गत देश में नक्सलवाद की समस्या के आरम्भ एवं इसके राष्ट्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों का विस्तृत विवरण इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

मूल बिंदु : नक्सलवाद, हिंसात्मक आन्दोलन, राजनीतिक विचारधारा

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 8, August 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108062 |

प्रस्तावना :

नक्सलवाद की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं दी जा सकती है। समय, स्थान एवं परिस्थितियों के अनुसार इसका अर्थ परिवर्तित होता रहा है। नक्सलवाद को कभी शोषण, अन्याय एव अत्याचार के विरूद्ध एक आवाज के रूप में देखा जाता है तो कभी इसे अपराधियों द्वारा अपराधियों के लिए किये जा रहे हिंसक आंदोलन का रूप दिया जाता है। कभी इसे घृणा एवं दमित इच्छाओं का विस्फोट मात्र भी बताया जाता है। कभी कहा जाता है कि नक्सलवाद आम जनता में भय उत्पन्न नहीं करता अपितु शोषक व्यक्ति को डराता है। हमारी भारतीय सामाजिक व्यवस्था का मानना है कि नक्सलवाद हिंसक अपराधियों का एक गिरोह है जो अपने निहित स्वार्थ साधन हेतु निर्दोषों की हत्याएं, लूटपाट और मार–काट के द्वारा समाज में अशांति फैलाता है, ठीक इसके विपरीत दूसरे विचारकों के अनुसार नक्सलवाद एक राजनीतिक विचारधारा है जो मार्क्सवाद, लेनिनवाद और माओ–त्से–तुंग के सिद्धान्त से संचालित और अनुशसित है, चूंकि पश्चिम बंगाल के नक्सलवाड़ी जिले में हुए आदिवासी किसानों का सशस्त्र विद्रोह इसकी बुनियाद है, इसलिए इस विचारधारा को मानने वाले लोग नक्सली और इनका राजनीतिक दर्शन नक्सलवाद के नाम से जाना जाने लगा।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र लेखन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है–

- नक्सलवाद की समस्या का विश्लेषण करना
- नक्सलवाद की समस्या का भारतीय परिदृश्य में ऐतिहासिक पृष्भूमि का अवलोकन करना।
- भारत राष्ट्र में नक्सलवाद के बढ़ने के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करना

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 8, August 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108062 |

आंकड़ों के स्रोत :

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीयक आंकड़ों की सहायता से पूर्ण किया गया है, द्वितीयक आंकड़ों का संग्रहण विषय से संबंधित विभिन्न प्रकार के साहित्यों का अध्ययन कर किया गया है, एवं इसके अलावा साथ ही विषय से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारियों का संग्रहण विभिन्न ऑनलाइन स्रोतों के माध्यम से भी किया गया है।

उपलब्ध साहित्यों की समीक्षा :

- **डंग एवं पटनायक (2013)** ने उड़ीसा के सुंदरगढ़ जिले के नक्सल प्रभावित गाँवों में वहाँ निवासरत् जनजातीय समुदाय की आजीविका एवं सामाजिक–आर्थिक स्थिति के परिप्रेक्ष्य में किया।
- **बग्गा (2015)** ने भारत में नक्सलवाद के बढ़ते प्रभाव का बौद्धिक मिथक एवं कार्यात्मक यथार्थता के सदंर्भ में विश्लेषण किया। अध्ययनकर्ता के अनुसार नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में निवासरत पिछड़े वर्ग की राजनीतिक गतिविधि में सक्रिय सहभागिता द्वारा इस समस्या का समाधान संभव है।
- **प्रवीण कुमार एवं सिंह (2015)** ने छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद, मानवाधिकार एवं मीडिया की भूमिका पर शोध किया। इस शोध में नक्सल हिंसा से जुड़े मानवधिकार सबंधी मुद्दों पर चर्चा की गयी है।
- **डॉ. वीरेन्द्र सिंह बघेल (2016)** ने अपनी कृति ‘‘नक्सलवाद : समस्या और समाधान’’ में नक्सलवाद के प्रारंभिक दौर और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का वर्णन किया है।
- **डॉ. विरेन्द्र सिंह बघेल (2016)** की पुस्तक ‘‘नक्सलहिंसा : एक जनसंघर्ष का भटकाव’’ में नक्सल समस्या को जनसंघर्ष के हिंसात्मक रूप के साथ वैचारिक तकाजे के साथ दर्शाया गया है।

भारत में नक्सलवाद की पृष्ठभूमि :

नक्सलवाद का पहला दौर 1967—1973, ग्रामीणों को दिवास्वप्न दिखाकर भड़काना माना जाता है जिसमें जनजातियों के सामने नक्सली खुद को उनका रहनुमा बताते है, सामंती व्यवस्था का विरोध जताते है और उन्हें भड़काते है। पिछड़ों को बराबरी का हक दिलाने का दावा करते है। इसके लिए वे हथियारों के दम पर वर्ग संघर्ष की वकालत करते है। वे सरकार, जमींदार, नौकरशाह और उद्योगपतियों को अपना दुश्मन कहते हैं। वे आंतक के बल पर उगाही करते रहे है।

नक्सलवाद के प्रथम दौर में नक्सलवाद पश्चिम बंगाल, बिहार, केरल तक ही सीमित था फिर भी इसे रोकने के लिए सरकार द्वारा बल प्रयोग किया गया। इसके साथ जयप्रकाश नारायण और कुछ अन्य व्यक्तियों द्वारा नक्सल प्रभावित इलाकों में जाकर जनता से सीधा सम्पर्क किया गया उन्हें नक्सलवाद का विरोध करने और उसे समाप्त करने के लिए आगे आने के लिए प्रेरित किया गया। उनके प्रयत्नों से नक्सली हिंसा को दूर करने में आंशिक सफलता भी मिली। शासकीय बल प्रयोग एवम् जयप्रकाश नारायण जैसे व्यक्तियों के प्रयासों से इस दौर के अंतिम चरण तक नक्सलवाद काफी धीमा पड़ गया।

नक्सलवाद का दूसरा दौर 1973—2013 तक का माना जाता है। इसमें नक्सलवादी क्षेत्र का विस्तार कर्नाटक, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, झारखंड, उड़ीसा, उत्तरप्रदेश और छत्तीसगढ़ तक हो गया। इन क्षेत्रों में नक्सलवादियों ने उग्र गतिविधियों को अंजाम दिया जिसमें पुलिस वालों की हत्याएँ, अफसरों का अपहरण करना आदि था। नक्सलियों के खिलाफ सरकार जैसे ही आक्रामक हुई उन्होंने भी रणनीति पकड़े जाते तो निर्दोष ग्रामीण होने का ढोंग करते। आतंक दिखाने के लिए वे दौरे पर निकले सरकारी अफसरों को अगवा करने लगे। जिन्हें फिरौती या फिर खूब प्रचार पाने के बाद रिहा करते।

(A High Impact Factor, Monthly, Peer Reviewed Journal)
| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|
||Volume 11, Issue 8, August 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108062 |

अब तो वे उनकी लाशों में भी बम फिट करने लगे हैं ताकि और लोगों को मारा जा सके। नक्सलवाद का तीसरा दौर 2013 से वर्तमान तक का माना गया है।

निष्कर्ष :

उपरोक्त अध्ययन के उपरांत यह कहा जा सकता है की वर्तमान संदर्भों मे नक्सलवाद की समस्या राष्ट्र के समक्ष एक ज्वलंत समस्या के रूप मे विद्यमान है यह समस्या देश मे आर्थिक उन्नति एवं विकास के पथ मे तो बाधा है ही साथ इस राष्ट्रीय आपदा ने हमारी व्यवस्था को नुकसान पहुंचाया है। नक्सल प्रभावित क्षेत्रों विशेषकर देश के पूर्वोत्तर राज्यो जहां इस समस्या का प्रकोप अधिक है ऐसे क्षेत्रों मे जनसमुदाय का जीवनयापन करना काफी मुश्किल हो जाता है। वर्तमान संदर्भ मे इस समस्या के समाधान हेतु उपाय सुझाना तो प्राथमिकता है ही इसके साथ ही इस समस्या को फैलाने वाले प्रमुख तत्वो एवं इसके कारणो का पता लगाना भी अति आवश्यक है, ताकि इसका स्थायी समाधान निकाला जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. Balagopal K. (1992). : ―'War' against Naxalism‖, Economic and Political Weekly , http://www.jstor.org/stable/4398483, Accessed: 02/12/2009 , p. 1222 285
2. Harsh Kumar Sinha & Ashwini Kumar Pandey, Naxalism : A threat to Indias Internal Security, Defence Studies Research and Development, Vol. 1, Jan.2009
3. Report 2013-14, Ministry of Home Affairs, Government of India.)
4. Report 2018-19, Ministry of Home Affairs, Government of India.

| e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2320-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118|

||Volume 11, Issue 8, August 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1108062 |

5. Research Review- International Journal of Multidisciplinary Vol. 4 Issue 2, Feb. 2019, P.no. 880.
6. Singh Prakash, The Naxalite Movement in India,Rupa& Co, New Delhi, 1995, P 308 xiv.
7. Singh Rakesh Kumar – (2007) Stress Management in CRPF (The Indian Police Journal Vol. LIV No.2 April-June)
8. Staff Reporter, CPI(ML) Naxalbari, CPI(Maoist) merge, http://www.thehindu.com/todays-paper/tp-national/tp-kerala/cpiml-naxalbaricpimaoist-merge/article5964758.ece, accessed on: 07/08/2014
9. Sukma Naxal Attack: 1 CRPF personnel martyred, 10 injured in IED blast by Maoists in Chhattisgarh". Jagran English. 29 November 2020. Retrieved 27 March 2021.
10. Sukma: Naxalite attack on 206 Cobra Battalion, 9 soldiers injured". Zeenews.india.com. Retrieved 27 March 2021

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com